वृक्षाः सत्पुरुषाः इव

इस अध्याय के सभी महत्वपूर्ण प्रश्न – उत्तर सहित। पहले खुद हल करने की कोशिश करो, फिर उत्तर मिलाओ।

अभ्यास प्रश्न-उत्तर (हर टॉपिक से)

» प्रदर्शनी संवाद: वृक्ष पूज्य क्यों?

» वृक्षाः सत्पुरुषाः इव: छाया और फल

» दशकूप से द्रुम तक: वृक्ष का मूल्य

» परोपकार: वृक्ष, नदी, गाय, शरीर

» नदी-वृक्ष-मेघ: सज्जन की समृद्धि

» अभ्यास और पर्यावरण संदेश

हल किए हुए उदाहरण (step-by-step)

उदाहरण 1. वृक्ष पूज्य क्यों माने जाते हैं? 2 कारण।

› शुद्ध वायु देते हैं।
› फल-पुष्प आदि देते हैं।

उत्तर – वृक्ष शुद्ध वायु तथा फल-पुष्प आदि देकर सबका उपकार करते हैं, इसलिए पूज्य हैं।

उदाहरण 2. वृक्षों को सत्पुरुष क्यों कहा गया? 2-3 वाक्य।

› स्वयं धूप में रहते हैं।
› दूसरों को छाया और फल देते हैं।
› सज्जन भी स्वयं कष्ट सहकर हित करते हैं।

उत्तर – वृक्ष स्वयं धूप में खड़े रहकर दूसरों को छाया और फल देते हैं; सत्पुरुष भी स्वयं कष्ट सहकर दूसरों का हित करते हैं–इसलिए वृक्ष सत्पुरुषों जैसे हैं।

उदाहरण 3. 'दशपुत्रसमो द्रुमः' का संदेश एक वाक्य में लिखिए।

› तुलना की सीढ़ी याद करें।
› निष्कर्ष: एक वृक्ष बहुत मूल्यवान।

उत्तर – एक वृक्ष का उपकार दस पुत्रों के समान–अर्थात् अत्यंत मूल्यवान–माना गया है।

उदाहरण 4. परोपकार के तीन प्राकृतिक उदाहरण लिखिए।

› वृक्ष फल।
› नदी जल प्रवाह।
› गाय दूध।

उत्तर – वृक्ष फल देते हैं, नदियाँ जल देती हैं, गायें दूध देती हैं–ये सब परोपकार के उदाहरण हैं।

उदाहरण 5. वृक्ष से मिलने वाली किन्हीं पाँच वस्तुओं/लाभों के नाम लिखिए।

› पाठ की सूची याद करें।
› पाँच चुनकर लिखें।

उत्तर – पुष्प, पत्र, फल, छाया, काष्ठ (या मूल/वल्कल)–इनमें से पाँच।

उदाहरण 6. (क) वृक्षाः स्वयं कुत्र तिष्ठन्ति? (ख) परोपकाराय काः वहन्ति?

› पाठ से एकपद चुनें।

› (क) आतपे (ख) नद्यः

उत्तर – (क) आतपे। (ख) नद्यः।

बोर्ड परीक्षा के लिए ख़ास

- उत्तर में कम से कम दो लाभ लिखें।
- भावार्थ में 'परार्थ/परोपकार' शब्द अवश्य रखें।
- क्रम सही लिखें; केवल अंतिम पंक्ति याद कर लेना पर्याप्त नहीं।
- भावार्थ में 'निराश न होना / उपकार' जैसे शब्द रखें।
- सूची प्रश्न में क्रमबद्ध नाम लिखें।
- एकपद और पूर्णवाक्य प्रश्नों को अलग पहचानें।

एक नज़र में रिवीज़न

› शुद्ध वायु + फल-पुष्प = पूज्य।

› आतप में स्वयं • छाया-फल दूसरों को।

› सीढ़ी का शिखर = द्रुम।

› वृक्ष-नदी-गाय-शरीर = परोपकार।

› स्वयं न भोगो • दूसरों को दो।

› एकपद + शब्दार्थ + वृक्षारोपण।